भक्त हृदय के उदगार

किस भाव से तुझको आन मिलूँ, मैं यह सब जानूँ न।
तव प्रेम में सब कुछ भूल गये, अब कछु भी मानूँ न।।

भक्तन् की गाथा पढ़ती हूँ, वह प्रेम मैं मानूँ न।
उस प्रेम की अग्नि मुझको लगे, तो ही तो जानूँ न।।

तव प्रेम में निज को भूल गये, यह कछु भी मानूँ न।
तव प्रेम में निज को भूलूँ मैं, तो ही तो जानूँ न।।

इतनी बिनती सुनो हरि तुम मोरी, तुम जल्द चले आना।
उस प्रेम की अग्नि मुझको लगा, यह सब समझावो न।।

-परम पूज्य माँ
प्रार्थना शास्त्र- 1 नं. 36 (18.2.1959)

अनुक्रमणिका

1. **भक्त हृदय के उद्‌गार..**
किस भाव से तुझको आन मिलूँ...

3. **परम तत्व का जीवन में प्रमाण**
डॉ. जे के महता

7. **..जहाँ सम्पूर्ण जग सोता है, वहाँ संयमी जागते हैं!**
श्रीमद्भगवद्गीता- 'भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन', अध्याय - 2/69

12. **शुक्ल पक्ष, कृष्ण पक्ष**
परम पूज्य माँ से पिताजी के प्रश्नोत्तर

16. **वो 21 दिन,**
माँ संग मैं तो परछाई की तरह जुड़ गई..
श्रीमती पम्मी महता

19. **कौन बुलाता है.. बार बार मधुबन में?**
एक सत्संगी

21. **गुरु दर्शन**
विष्णु प्रिया महता

24. **लक्ष्य सामने देख करी, इक चित उसमें ध्यान लगा..**
मुण्डकोपनिषद्, द्वितीय मुण्डक 2/3

28. **'माँ' - एक अनुपम उपहार**
रेनु नागरथ

31. **माँ तो सब जानते हैं..**
नीता टंडन

34. **अर्पणा से मेरा परिचय**
श्रीमती शान्ता देवी

37. **अर्पणा समाचार पत्र**

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविन्द से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*

सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल,
132 037, हरियाणा भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल 132 037 01, हरियाणा द्वारा अगस्त 2023 को प्रकाशित

परम तत्व का जीवन में प्रमाण

डॉ. जे.के.महता
(पूर्व संकलन)

चित्र में पापा जी, श्री सभरवाल
एवं कम्बर दरबार (मुंबई) से गोपाल भाई

पिप्पलाद मुनि के पास छः ऋषि पहुँचे जो तत्व ज्ञानी थे और जिनके अपने अपने आश्रम थे.. लाखों की संख्या में जिनके शिष्य भी थे। स्वरूप से अनभिज्ञ.. इन ऋषियों ने मुनि से सत जानने की जिज्ञासा प्रकट करी तो मुनि ने उनसे कहा, 'पहले एक वर्ष तक तप, श्रद्धा और ब्रह्मचर्य से मेरे आश्रम में रहो और देखो.. उसके बाद प्रश्न पूछना।' यह कह कर, उन्होंने उनको मानो स्वरूप का जीवन में रूप देखने के लिये कहा। केवलमात्र शब्द-ज्ञान से ही समझ नहीं आती, बल्कि जीवन के दर्शन से ही इस रूप को समझा जा सकता है !

अपने जीवन की ओर दृष्टि दौड़ा कर मुझे इस कथन की सत्यता का अनुभव सहित पता चला। मुझे बचपन से ही आध्यात्मिक शास्त्रों के पठन और श्रवण में रुचि थी। मैंने श्रीमद्भगवद्गीता और उपनिषदों का कई बार अध्ययन किया था, और अनेकों सन्तों के चरणों में बैठ कर आत्म-विषयक चर्चाएँ भी सुनीं थीं। भावना की उड़ान में, कई बार गीता और उपनिषदों में प्रतिपादित तत्व की कल्पना से आनन्द विभोर भी हो जाता था; परन्तु आन्तर में मैं अपने आप से सदा असन्तुष्ट ही रहता था।

राग-द्वेष, परदोष-दर्शन, अहंकार इत्यादि अनेकों विकारों को अपने आन्तर में देख कर मैं इनका निवारण करने में अपने को असमर्थ पाता था। इसके लिए भी मैं जग को दोषी ठहराता था। मैं समझता था कि इस जग ने ही मुझे मोहित करके सत्य से दूर कर दिया है।

इसके साथ ही साथ मेरे मन में यदा-कदा एक संशय उठता रहता था.. 'इन प्राचीन ग्रंथों में जिस तत्व की चर्चा की गई है, क्या यह साधारण प्राणी के लिए जीवन में धारण कर पाना संभव भी है या नहीं.. कहीं यह सब शास्त्र, गीता, उपनिषद् आदि केवल कवियों की कल्पना की उड़ान ही न हों!'

भगवान की अतीव कृपा से मुझे दो बार, 1945 और 1950 में दक्षिण जा कर 'अरुणाचल' में भगवान रमण महर्षि के चरणों में कुछ दिनों के लिए बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसी समय मैंने उनके जीवन का और वाणी का अध्ययन भी किया।

'रमणाश्रम' में लोगों में एक विश्वास था कि रमण महर्षि मौन में ज्ञान और दीक्षा देते हैं। इस कारण वहाँ प्रश्नोत्तर बहुत कम होते थे। अन्य लोगों की तरह मैं भी एक बड़े हॉल में उनके सामने बैठ कर गीता कथित भगवान की वाणी पर ध्यान लगाया करता था।

एक दिन सहसा मुझे लगा जैसे भगवान के शब्दों का तत्व सार मेरे आन्तर में प्रकाशित होने लगा है और मैंने अपने सामने बैठे रमण महर्षि को उस ज्ञान की साकार प्रतिमा पाया। तत्पश्चात् जब भी मैं श्रीमद्भगवद्गीता अथवा उपनिषदों का अध्ययन करता तो मुझे ऐसा प्रतीत होता जैसे श्लोक बोल रहे हैं और अपना घूँघट उठा कर अपने में निहित आध्यात्मिक तत्व का रहस्य प्रकट कर रहे हैं। मैं इस सब को रमण महर्षि की कृपा समझता था और अपने आंतर में मैंने उन्हें सदगुरु के रूप में धारण कर लिया। मेरे लिए यही उनकी मौन शिक्षा और दीक्षा थी।

एक ओर तो मैं इस प्रकार गुरु कृपा से अपने आंतर में शास्त्र के ज्ञान का प्रकाश महसूस करने लगा और 'मैं कौन हूँ' की खोज में 'मैं तन नहीं, मैं मन नहीं, मैं बुद्धि नहीं.. मैं सत-चित्त-आनन्द आत्मा हूँ', इस भाव में रमण करने लगा। दूसरी ओर जीवन में राग-द्वेष, दोष-दृष्टि इत्यादि अवगुण वैसे ही बने रहे। मेरे आन्तर में दिनोंदिन स्वयं प्रकट शास्त्रीय ज्ञान का गुमान बढ़ता गया और मैं अपने को अन्य लोगों की अपेक्षा महाश्रेष्ठ मानने लगा।

अपनी त्रुटियों और कमियों के लिये संसार को दोषी ठहराने लगा। संसार में मेरे पास धन-धान्य, मान प्रतिष्ठा, उच्च स्थान, प्रिय और विश्वसनीय मित्रों और नातेदारों से घनिष्ठ सम्बन्ध, सभी कुछ था। मैं अपने मोह को न देख कर, इन सब को ही बंधनकारक मान कर अध्यात्म से अपने पतन के लिये इन्हें दोषी मानने लगा।

ऐसी अवस्था में 9 मार्च 1958 को अनायास ही परम पूज्य माँ से मेरा सम्पर्क हुआ। उस समय मैं उनकी आध्यात्मिक स्थिति को तनिक भी नहीं जानता था। जीवन में वह इतने साधारण लगते थे कि मैं उन्हें अपने से भी न्यून मानता था। अपने को आध्यात्मिक ज्ञान के विषय में अति श्रेष्ठ और इनको इसके बारे में अनभिज्ञ मानते हुए भी मैंने अपने आन्तर में उनके प्रति एक विशेष लगाव का अनुभव किया। थोड़े ही दिनों में मैंने उन्हें अपना सुहृदय मित्र पाया और वह मेरी पत्नी और बच्चों के भी विश्वसनीय मित्र बन गये।

इस प्रकार मेरे सारे परिवार की अपने-अपने स्तर पर उनके साथ घनिष्ठ मित्रता हो गई। घरेलू और बाह्य संसार की अनेकों समस्याओं में वह हम सबको एक बड़ा सहारा और आसरा लगने लगे। वास्तव में परिवार का प्रत्येक व्यक्ति उनसे अपनी व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान पाने लगा। हम इन्हें अपने परिवार का एक अभिन्न सदस्य मानने लगे। अगले 5 वर्ष में यह सम्बन्ध और भी घनिष्ठ होता गया और मेरे हृदय में उनके लिए सम्मान और आदर सत्कार दिन प्रतिदिन बढ़ने लगा.. गीता का जो ज्ञान मुझे था और जिस ज्ञान की तुला में मैं स्वयं नहीं तुल सका.. मेरी दृष्टि में पूज्य माँ उसमें नित्य प्रति तुलते गये।

2 अक्तूबर 1962 को जब मेरी तुला में वह पूर्णतया तुल चुके तो मुझे लगा कि रमण महर्षि ही इस रूप में मेरे सम्मुख पुनः आ कर खड़े हुये हैं, और पूज्य माँ ही मानो गीता की सप्राण प्रतिमा हैं.. मुझे ऐसा अनुभव हुआ और मैंने घोषित कर दिया कि 'आप तो आत्मा में समाहित स्वरूप स्थित हैं। आपकी तो स्थिति वही है जो रमण महर्षि की!' मेरी बात को सुनकर वह इस तरह मुस्कुरा से दिये जैसे कि मेरी बात का कोई महत्व ही नहीं। मेरे इस प्रकार कहने पर वह कहने लगे, 'मुझे क्या मालूम? मैं तो वही हूँ जो 5 वर्ष पहले, आपके सम्पर्क में आने से पहले थी।'

यह सुनकर मैं बहुत ही विस्मय में पड़ गया.. मैं तो इनकी इस स्थिति को 5 वर्ष पर्यंत निरन्तर श्रद्धा और प्रेम से की गई साधना का परिणाम मानता था।

5 वर्ष के सम्पर्क में पहली बार मैंने इनसे प्रश्न किया और फिर बरसों तक निरन्तर प्रश्न ही करता रहा। इनका प्रत्येक उत्तर मेरी हर मान्यता के विपरीत था.. परन्तु मुझे लगता कि यह ठीक कह

रहे हैं। मुझे अनुभव सहित पता चला कि मेरा ज्ञान ग़लत था। मुझे प्रत्यक्ष लगता कि मेरे प्रश्नों के उत्तर में इनका ज्ञान इनके अपने अनुभव राही बह रहा है।

बहुत बार मैंने संशय के समाधान के लिए प्रश्न नहीं पूछे.. वह मौन रहे और मैं समझा कि उन्होंने मुझे मौन में शिक्षा और दीक्षा दी है; पर आज मैं समझा हूँ कि वह सब मेरे अपने मन की कल्पना थी। पूज्य माँ के चरणों में बैठ कर प्रश्न करने से मेरी हर मान्यता में और जीवन में परिवर्तन आने लगा। उस आत्म तत्व का प्रमाण मैं इनके जीवन में नित्य पा रहा हूँ और वह मुझे अपनी दिनचर्या में उस तक पहुँचने की विधि बता रहे हैं।

आत्मस्वरूप का जीवन में रूप क्या है, यह मैंने पूज्य माँ के जीवन राही देखा। बरसों उनके पास रहकर, निरन्तर उनसे परिप्रश्न करके देखा और वह स्वयं उस ज्ञान की तुला पर तुलते गये। इस विधि गुरु कृपा से गीता कथित दैवी गुणों को मैं उनके जीवन राही ही समझ पाया हूँ। उनके जीवन को समीप से देख कर मैंने जाना कि राग-द्वेष रहित हो कर, मित्र और शत्रु के प्रति सम भाव एवं प्रेम के प्रवाह का जीवन में क्या रूप होता है!

अपने आपको पूर्णतया विस्मृत करके **'सर्व भूत हिते रतः'** की झलक भी मुझे उनके जीवन राही ही मिली है। जीवन में निर्भयता, निन्दा-स्तुति, मान-अपमान में समत्व तथा निरन्तर मौन का प्रमाण साधारण परिस्थितियों में रह कर ही मिलता है.. यह मैं उनके जीवन को देख कर ही जान पाया। **अमानित्वं, अदम्भित्वं** इत्यादि गुणों का वास्तविक अर्थ भी उनके ही जीवन राही पाया है।

भगवान की अहैतुकी कृपा से जो मुझे 'गुरु सहवास' का सौभाग्य प्राप्त हुआ और परिणामस्वरूप उनके जीवन के दर्शन से ज्ञान का जीवन में रूप देखा, यही मेरे सदगुरु की मौन में दीक्षा और शिक्षा है। यही उस परम तत्व के प्रमाण का जीवन में दर्शन है। 'गुरु' की व्याख्या परम पूज्य माँ के ही शब्दों में..

भक्ति की है देन गुरु, परम पुकार परिणाम गुरु।
राम का है वरदान गुरु, गुरु रूप में राम गुरु।।

राम में गुरु में भेद नहीं, आत्म में गुरु में भेद नहीं।
राम आत्म और गुरु में, हो सके विच्छेद नहीं।।

गुरु कृपा सुन जिस पल हो, परम को जान तू जायेगा।
सच तो यह वा दर्शन से, प्रथम झलक तू पायेगा।।

❖ ❖ ❖

संयमी जागते हैं वहाँ, जहाँ सम्पूर्ण जग सोता है!

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।।

श्रीमद्भगवद्गीता - 2/69

साधारण जीव तथा मुनि में भेद बताते हुए भगवान कहते हैं :

शब्दार्थ :

1. जो सब भूतों की रात्रि है,

2. उसमें संयमी जागता है,

3. जिसमें सब भूत जागते हैं,

4. देखते हुए मुनि की वह रात है।

तत्व विस्तार :

जो सम्पूर्ण भूत गण की रात्रि है, यानि :

1. जिसे अन्य जीव रात्रि और अँधियारा कहते हैं।
2. जिसे अन्य जीव मृत्यु कहते हैं।
3. जिस तत्व को वह न देख सकते हैं।
4. जिस प्रकाश को वह न समझ सकते हैं।
5. जिस ज्ञान को वह अज्ञान कहते हैं।
6. परम तत्व के प्रति वह सोये रहते हैं।
7. अपने प्रति भी सोये हैं सब लोग।
8. अपने को ही नहीं जान सकते।
9. जो मृत्यु देखें सामने, उसे पहचान नहीं सकते।
10. अँधियारे में क्या जान सकेंगे वह?
11. सत्त्व प्रति वह लोग महा मौन हैं।
12. यह मौन अँधियारा होता है।
13. मोह, संग, चाह की यहाँ झड़ी लगी होती है।
14. ज्ञान सूर्य पर आवरण छाया हुआ है।
15. सत्य के प्रकाश पर अहं का ग्रहण लगा हुआ है।
16. सत की ज्योति मंद पड़ जाती है।
17. असतवर्ती, असत रमणी, मानो सत के प्रति सो गया होता है।

18. अज्ञान आवरण इतना चढ़ा होता है कि मानो घोर अँधियारा हो गया।

सो उनकी भी रात्रि ही होती है। वह जागते हुए भी सोये हुए होते हैं।

क) चेतन आत्म प्रकाश स्वरूप को जग में जाना था और जग को ज्योतिर्मय करना था।
ख) उस पर तन का कफ़न पहना दिया और रात कर दी। तन से आवृत उसे किया और अंधेरा हो गया।
ग) अब प्रकाश बाहर कैसे आये? तन ने उसको रोक लिया।
घ) जो पूर्ण जग को प्रकाश दे सकता था, वह स्वयं अंधा हो गया।
ङ) इक तन का चाकर उसे बना दिया, तो वह सत के प्रति सो गया।
च) अज्ञान रूप माया अंधेरा है।
छ) अहंकार ही अंधेरा है।
ज) मोह ही वह चाँदनी रात है जिसमें अस्पष्ट सा दिखता है।

संग ही जीवन की रात में वह सितारे हैं, जो विभ्रान्त कर देते हैं और सुख की झलक विषयों में से मिलने लगती है। सपनों से भर देती है हक़ीक़त के संसार को भी, यह सुख की झलक। मृगछाया देख कर वास्तविकता का आभास होने लगता है और यह अशान्त कर देती है।

वहाँ संयमी जागते हैं, अर्थात् :

1. सत्त्व तत्व के प्रकाश में जागते हैं संयमी गण।
2. तनत्व भाव का पूर्णतया अभाव हो गया तब ही जाग सकते हैं।
3. विषय संग नितान्त अभाव हो जाये तब ही जाग सकते हैं।
4. स्थूल से संग का अभाव हो तब ही जाग सकते हैं।
5. निज को वे अखण्ड प्रकाश जानते हैं तब ही वे नित्य प्रकाश में रहते हैं।
6. संयमी गण अपने आपको जान गये होते हैं।
7. मोह त्याग के कारण संयमी लोग जाग गये होते हैं।
8. ज्ञान हुआ तो अज्ञान चला गया। ज्ञान का दिन जो चढ़ गया है तो संयमी जाग गये।
9. वे आत्म भाव, परम भाव में जाग गये होते हैं।

10. मिथ्यात्व प्रति वे हुए मौन तो जाग गये।
11. सम्पूर्ण वृत्तियन् का किया त्याग तो जाग गये।
12. आशा तृष्णा का गया पाश तो जाग गये।
13. तनत्व भाव रखने वाला विषय से संग करता है। तन के आवरण ने ही अंधेरा किया था, यह संग गया तो जाग गये।
14. वृत्तियन् का इन्द्रियन् राही जो आवागमन था, वह ख़त्म हुआ तो जाग गये।

यानि वह संयमी गण सत्त्व तत्व के प्रति जाग गया। इस कारण जहाँ सम्पूर्ण जग सोता है, वहाँ संयमी जागते हैं।

1. जग जाग के 'मैं तन हूँ' मानता है, वह तन में जागता है, तनत्व भाव में जाग रहा होता है।
2. 'मैं कर्ता हूँ', 'मैं महाबली' इस अहंकार में जाग गया होता है जीव।
3. मेरी रुचि है महाश्रेष्ठ, इस भाव में जाग रहा है जीव!
4. 'मैं मार सकूँ' 'मैं मर जाऊँगा' इस मिथ्यात्व में जाग रहा है जीव!
5. 'मैं श्रेष्ठ हूँ, मैं न्यून हूँ' ऐसे भावों में जागता है जीव।
6. वास्तव में वह मोह में ही जागा होता है। क्यों न कहूँ मोह जागा और वह समझा वह जाग गया।
7. आशा, तृष्णा पाश ग्रसित मूर्ख समझता है कि वह जाग गया।

जीवन में, दिनचर्या में जागा हुआ जो काज करता है, वहाँ पर भी तो :

क) गुण गुणन् में वर्तते हैं, वह तो केवल उनके पीछे पीछे चलता है।
ख) रुचिकर गुण आकर्षित करते रहते हैं, उनकी ओर वह स्वत: बढ़ जाता है और कहता है 'मैं बढ़ा'।
ग) जितनी तीव्र पसन्द हो, उतनी तीव्रता से काज करता है।

अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता' – हिन्दी में..

अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता' - इंगलिश में..

घ) कितना राग है, उसकी कर्मगति उस पर ही आश्रित है।

ङ) द्वेष कितना है, उस पर ही उसकी पलायन गति आश्रित है।

यह सब होता तो स्वत: है, पर वह कहता है, 'मैं करता हूँ।'

मन जिधर भी होता है, वहाँ उसका जागरण होता है। उसका मन अधिकांश इन्द्रियों के संग ही विषयों में होता है। सो जीव जागरण वास्तविक विवेक में जागरण नहीं है। संसार जीवत्व भाव में जाग रहा है, यानि स्वप्न लोक में जाग रहा है। राग द्वेष से भरा हुआ, वह समझता है कि जीवन में वह बहुत काज करता है। वास्तव में वह कुछ नहीं करता, गुण ही उस पर राज्य करते हैं। इन्द्रिय पाश में बंधा वह कर भी क्या सकता है? रस रसना से बंधा हुआ वह सोच भी क्या सकता है? काम, क्रोध, मोह में बंधा हुआ वह तो आज़ाद भी नहीं है। बुद्धि रहित वह जाग रहा है तो उसका जागना व्यर्थ है। मिथ्या सिद्धान्तों में बंधा वह सत असत भी नहीं समझता। मिथ्यात्व में वह जाग रहा है। वृथा आशा, फल तृष्णा से बंधा हुआ सुखी दु:खी वह जाग रहा है। यदि स्थूल से और विषयों से प्रभावित होता है तो सत्य के प्रकाश में नहीं जागा, वह मिथ्यात्व में, स्थूल में जाग रहा है।

अजी! वह नहीं जागा, उसका तन जागा है, केवल निज तन को स्थापित करने के लिये ही वह जागा है। मानो अज्ञान के अँधियारे में वह जाग रहा है। मृत्यु धर्मा तन, जो वह है नहीं, उसके जागने से वह समझा कि वह स्वयं जाग रहा है। यह मान कर वह जाग रहा है। झूठ को सच मान कर वह समझता है यही प्रकाश है और उसमें विभ्रान्त हुआ वह जाग रहा है।

जहाँ औरों का प्रकाश है, देखते हुए मुनि की वह रात है :

1. तत्व प्रकाश का खोना ही संयमी मुनि की रात है, वह मुनि तो आत्मा के प्रति जाग गया होता है।
2. जो वास्तविकता देख रहा है, वह तन रूपा रात में नहीं जगता।
3. जो आत्मवान बन गया है, उसके लिये आत्मा के सिवा सब रात ही है।
4. सत प्रकाश जिसको मिला, वह अज्ञान के अन्धेरे से जाग गया है।
5. तनत्व भाव से उठ गया है ऐसा मुनि।
6. उसकी 'मैं' परम के और आत्म तत्व के शरणापन्न हो चुकी है।
7. वह निरन्तर परम में निमग्न रहता है। वह जग के प्रति जाग सकता है परन्तु निज तन के प्रति वह नित्य मौन है।
8. उसका मन परम में निरन्तर टिका हुआ है।
9. जिसका मन ही कर्म में नहीं रहता तो मानो वह उसके प्रति सो गया।

वास्तव में पुन: समझ :

10. निज तन के प्रति वह सो गया है।
11. तन के कारण उसे कुछ नहीं चाहिये, वह आत्मवान जो हो गया है।
12. तन उसने जग को दे दिया, अब जो काज सामने आये वह कर देता है।
13. श्रेष्ठ न्यून की बात नहीं होती। तब जैसा कोई चाहे, वह वैसा ही कर देता है।

14. तन से नाता क्या छूटा, उसके अपने तन का कोई प्रयोजन नहीं रहा। मानो उसने कफ़न ही पहन लिया और जग में जीते जी ख़त्म होने चला।
15. उसके सामने जो भी काज आये उसमें वह जान लड़ा देता है।
16. मान अपमान उसे रोक नहीं सकते।
17. फल की चाह उसे टोक नहीं सकती।
18. मान्यता पाश कोई नहीं रहता।
19. सुख दुःख, रुचि अरुचि नहीं रहती। बाकी जिसका काज है, केवल उसकी बात रह जाती है।

नित्य समाधि स्थित वह है :

1. तन जो अपना नहीं रहा तो अपने तन के प्रति वह सो गया।
2. संग जो कोई नहीं रहा तो निर्विकार वह हो जाता है।
3. सुख दुःख, चाहना, लग्न नहीं रहे तो वह निर्द्वन्द्व हो जाता है।
4. अहंकार भी नहीं रहता जब, तब वह उदासीन हो जाता है।
5. संसार जहाँ पर जाग रहा है वहाँ पर, यानि वह अपने तन में कभी नहीं जागता।
6. अपने प्रति जग जाग रहा होता है, वह अपने प्रति सोया हुआ है।
7. दूसरे के प्रति जग सोया हुआ है, दूसरों के प्रति यह नित्य जागा हुआ है।
8. तन की रात्रि देख कर ज्ञानवान मुनि का परम जागरण हो जाता है।
9. अपने प्रति जब पूर्ण मौन हो तब परम जागरण हो जाता है।
10. आत्मा में अखण्ड ध्यान हो तो परम जागरण हो जाता है।
11. अपने तन के प्रति विपरीतता, अनुकूलता जो भी हो, उसके प्रति वह मौन रहता है।

वास्तव में हुआ क्या? नन्हीं जान!

क) दृष्टिकोण ही बदला है।
ख) जीवन प्रयोजन ही बदला है।
ग) जीवन का भाव ही बदला है।
घ) जीवन का सार ही बदला है।
ङ) जीने का आचरण ही बदला है।
च) वृत्ति बहाव ही बदला है।
छ) जग का अर्थ ही बदल जाता है।
ज) रूप छोड़, स्वरूप में वह स्थित हो जाता है।
झ) केवल सत का अर्थ ही बदला है, अब वह अपने तन को अपना नहीं कहता जो सामने आये उसके तदरूप हो जाता है।

तब :

माटी का तन एक मन्दिर बन जाता है। उसका तन प्रेम का दरिया बन जाता है और वह आप परम स्वरूप हो जाता है। जग वहाँ से दैवी सम्पदा और दिव्य ज्ञान पाता है। वही स्थित बुद्धि आत्मवान है।

शुक्ल पक्ष, कृष्ण पक्ष

पिता जी - गीता के आठवें अध्याय में जीवन के दो मार्ग कहे हैं - एक शुक्ल पक्ष, दूसरा कृष्ण पक्ष। इनका क्या अभिप्राय है?

सारांश - शुक्ल और कृष्ण पक्ष आन्तरिक अवस्था को कहते हैं। सत्बुद्धि प्रधान, विवेकी जीव शुक्ल पथिक तथा मोह कालिमा सों ग्रसित जीव कृष्ण पथिक कहलाता है। मस्तिष्क की ओर बढ़ना उत्तरायण है। जहाँ पाद का सम्पर्क है, केवल उसी से संग करना दक्षिणायन है।

प्रश्न अर्पण

शास्त्रन् में तुम बार बार, साधना पथ की बात करो।
कोई पथ कहो शुक्ल पक्ष, कोई कृष्ण पक्ष तुम कहो।।1।।

शुक्ल कौन है कृष्ण क्या, उचित अनुचित न जानूँ।
अभिप्राय क्या इन द्वौ से है, तुम कहो तब ही जानूँ।।2।।

तत्व ज्ञान

कालिमा पूर्ण अँधियारा, जहाँ से कुछ न दीख सके।
जड़ मध्यान्तर आ जाये, दूजा कैसे दीख सके।।3।।

हृदय आवृत 'मैं' से हो, ब्रह्म ज्योति छिप जाये।
आन्तर अँधियारा भये, अपना आप नहीं दिख पाये।।4।।

कृष्ण पक्ष उसको जानो, जहाँ अँधियारा रह जाता है।
कालिमा पूर्ण इतना हो, कुछ भी नज़र नहीं आता है।।5।।

जीव दक्षिण जड़ पाँव हैं, जड़ धरती सम्पर्क करें।
पाँव कुछ भी न देख सकें, कृष्ण पक्षी इनको कहें।।6।।

जड़ इन्द्रिय धरती सम्पर्क, परिणाम संग कहो कृष्ण पक्ष।
इन्द्रिय पाछे मन बुद्धि गये, जानो प्रेयकर वह कृष्ण पक्ष।।7।।

मस्तिष्क को उत्तर जानो, ज्योति जहाँ पे जल सके।
विवेक ज्योत जले मस्तक, ज्योतिर्मय शुक्ल पक्ष भये।।8।।

विवेक राज्य मन बुद्धि पे, इन्द्रियन् पे भी हो जाये।
कदम स्वतः ही जहाँ बढ़े, शुक्ल पथिक वह कहलाये।।9।।

ज्ञान विज्ञान सहित

काज कर्म सों संग तजे, जिस पल मन श्रेय पथ कहो।
जब लग संग ही छाया हो, कालिमा पूर्ण उसे कहो।।10।।

जिस पथ पे 'मैं' ही छाया है, आवृत 'मैं' से हो जाये।
'मैं' 'मेरा' यह भाव जब, इक पल भूल ही न पाये।।11।।

वही उचित जो भला लगे, प्रिय सों संग ही हो जाये।
और जिस प्रिय से प्रीत करे, वही आपुनो हो जाये।।12।।

यह प्रेय पथ ही जानिये, कालिमा से आच्छादित है।
मनोकालिमा 'मैं' कालिमा, मोह से यह आच्छादित है।।13।।

उत्तरायण ओर जो कदम धरे, दक्षिणायन न दिख पाये।
उत्तर ओर जो कदम बढ़े, दक्षिण पाछे रह जाये।।14।।

राम की ओर जो मन बढ़े, सत्य हेरन् वह जायेगा।
साक्षी राम को आंतर में, आप ही वह बनायेगा।।15।।

जब साक्षी राम ही हो गए, उत्तरायण हो जायेगा।
उजियारा हो विवेक का, सूर्य रश्मि बन जायेगा।।16।।

साधक मन में जान ज़रा, को' साधना कौन करे।
साधना बस मन इतनी है, जो जस है उसे देख ले।।17।।

प्रेम ही सत् को कहते हैं, सत् ही सत् को कहते है।
दृढ़ सत् अविचलित हो, उत्तरायण उसे कहते हैं।।18।।

अब राम राम बस राम कहो, तेरी साधना ही राम है।
जो जो सत् तुम माने हो, बस वही भगवान है।।19।।

जो राम कहो जो मानो तुम, गर आप वह होना चाहते हो।
इक पल में उत्तरायण के, तुम पथिक हो जाते हो।।20।।

कौन पक्ष की कौन कहे, आन्तर में पक्ष हैं जानिये।
जब मन राम में टिक जाये, उसे राम पक्ष ही जानिये।।21।।

मन टिकाव की बात सुनो, कहाँ पे मन है टिका हुआ।
गर स्थूल में ही मनोलग्न रही, देखो अँधियारा वहाँ ज़रा।।22।।

सत्य दीख नहीं पाता है, वह अँधियारा कहलाता है।
किसी की भावना कैसी है, वहाँ कुछ नज़र नहीं आता है।।23।।

आपुनो भावना जैसी है, आरोपित करता जाता है।
मोह ही है यह कालिमा, जग दूषित करता जाता है।।24।।

यह हो तो मन जानिये, प्रेय पथ इसको मानिये।
मन प्रधान जिस पल होये, अँधियारा उसे जानिये।।25।।

यह जान करी यह मान करी, राम चरण में बैठी कहो।
उत्तरायण का पथ हे राम, तुम ही अब मुझे आन कहो।।26।।

आपुनो भावना जो भी है, श्रेय जिसे तुम कहते हो।
सत्य जिसे तुम कहते हो, उससे तुम दूर क्यों रहते हो।।27।।

जिस पल जो तुम सत् मानो, आवाहन उसका आप करो।
हृदय में उसको ले आओ, वा चाह उत्तरायण पथ ही हो।।28।।

मृत्यु बेला जिसे कहें, सत्य याद आ जाता है।
एक बार गर मन सुनो, उस पल राम बुलाता है।।29।।

मैं कहाँ मलिनता में रमा, सत्य काहे मैंने छोड़ दिया।
देख राम मेरे देख ज़रा, मैंने कहाँ पे नाता जोड़ दिया।।30।।

विवेक जिस पल जागृत हो, और सत्य सार तुम देख लो।
उस पल सों ही साधक वह, श्रेय पथ पथिक भये कहो।।31।।

को' बिछुड़ा को' छूट रहा, छूटा छूट ही जायेगा।
कई जन्म में कई मिले, भाव याद रह जायेगा।।32।।

नाते संगी सब मिटे, कुछ पल का यह साथ है।
उत्तरायण पथ पे वह ही है, जिसका यह निरंतर भाव है।।33।।

जब लौ मन न सत् देखे, अँधियारा उसे जानिये।
सत् की ओर जब मन बढ़े, उजियारा ही मानिये।।34।।

आन्तर आ के आपुनो, आप ही आपको देख ले।
कहाँ पे है लग्न तेरी, मन अपने आप में देख ले।।35।।

उदासीनता जिसे कहें, निराकांक्षा भी कहता है।
उसको उस पल साधक वह, देख पुकारता रहता है।।36।।

पुकार करी गर तड़प करी, कहे वह सत् तो माना है।
पर दिनचर्या में आपुनो राह, उसे नहीं पहचाना है।।37।।

फिर अपने कर्म वह देखे है, फिर कृतोस्मर की बात कहे।
आपुनो कर्म वह अपने ही, सामने धर कर देख ले।।38।।

जब देखे फिर राम कहे, कभी कहे मैंने क्या किया।
कभी कहे वह तड़प करी, अब तो घूँघट आन उठा।।39।।

इस पथ का जब पथिक भये, विवेक साथ गर उसका दे।
उत्तरायण पथ कहलाये, गर वह सत्त्व की ओर बढ़े।।40।।

सत् का पथिक वह आज भये, इस पल यह ही माँगे है।
राम कही के यह ही कहे, राम से राम को माँगे है।।41।।

जो भी राम मैं माने हूँ, वा सों मिलन मोरा हो जाये।
भावना सों मेरे राम सुनो, जीवन मिलन मोरा हो जाये।।42।।

मनोमिलन वहाँ हो ही गया, तो वाक् राम हो जायेगा।
कर्मन् में तब जान राम, प्रतिष्ठित सत् हो जायेगा।।43।।

'वाङ्मय मनसि प्रतिष्ठिता, मनो मे वाचि प्रतिष्ठितम्।'
शब्द की बात यह नहीं रहे, गर सत् ही सत् चाहेंगे हम।।44।।

राम कही के आपुनो भाव, अपना आप पुकार ले।
इस पल जो है आपुनो भाव, उसको प्रथम निहार ले।।45।।

बस साधना इतनी होये है, उत्तरायण ओर ही बढ़ जाओ।
अँधियारा तब दूर हो, गर प्रीत आप से कर पाओ।।46।।

22.12.1965

वो 21 दिन,
माँ संग मैं तो परछाई की तरह जुड़ गई..

श्रीमती पम्मी महता

परम पूज्य श्री हरि माँ के साथ मेरे जीवन का आग़ाज़ कैसे हुआ.. बहुत ही अद्भुत व दिल को छू लेने वाला आग़ाज़ था!

चलिए, आप सभी के संग अपने अनुभव बाँटते हुये पूज्य माँ को अपनी कृतज्ञता समर्पित करती हूँ। मेरे निकट सम्बन्धी सभी अक्सर कहा करते थे, परम पूज्य माँ तो भगवान का रूप हैं! मुझे अवसर मिला एक दिन.. और वह भी भाई साहब (डॉ. जे के महता) की तार राही (telegraphically), 'इस बार पूज्य माँ के जन्म दिवस पर 500 लोगों के लिए हलवे के प्रबन्ध करने का ज़िम्मा तुम्हारा है..' राम राम! ऐसी धड़कनें तेज़ हो गई कि कैसी करूँगी.. कैसे बनाऊँगी?

क्या करूँ, क्या न करूँ.. अपनी मामा से पूछने गई, 'कैसे बनाऊँगी इतना सारा हलवा, मामा? मैं तो एक कटोरी बनाती हूँ।' वह कहने लगीं, 'तुझे हलवा बनाना तो आता ही है.. हर चीज़ बराबर तोल कर ले जाना, बस! हो जायेगा तेरा काम!' खैर, प्रभु का नाम लेकर मैं सभी चीज़ें ले गई। हलवे का बनाना सफल हुआ.. सभी ने बहुत तारीफ की.. पूज्य माँ को भी अच्छा लगा। मैं तो कहूँगी कि परम पूज्य श्री हरि माँ की असीम कृपा ही हुई मुझ पर! पुनः पुनः धन्यवाद करती रही मन ही मन!

खैर, यह तो हो गया। मगर मन में बड़ी जिज्ञासा थी कि परम पूज्य माँ को करीब से जान पाऊँ। उनके विषय में जो सुन रखा है, क्या वह सब सच है? जितना कुछ भी जान सकी थी अब तक, वह मन को बहुत अच्छा लगा था। इसलिये जब बच्चों की छुट्टियाँ आईं तो मैं मन बना कर गई कि माँ को जानना है, करीब से देखना है मुझे.. इसलिये सोचा कि 21 दिन के लिये चलती हूँ!

पहुँचते ही माँ ने पूछा, 'कैसे आई हो?' मैंने कहा, आपको देखने आई हूँ! माँ ने कहा, 'किस pose में बैठूँ,' मैंने कहा, हर pose में देखना है आपको मुझे! बस, श्री हरि माँ की असीम कृपा हो गई मुझ पर.. उन्होंने मेरी इच्छा स्वीकार कर ली। उन 21 दिनों के लिये अपने संग मुझे परछाई की तरह जोड़ लिया.. वे सोते तो मैं सोती, वे चलते तो मैं चलती, वे खाते तो मैं खाती.. जब मुझे कुछ प्यार से समझातीं तो मैं समझने का भरपूर प्रयत्न करती! साथ ही साथ लिख भी लेती। मन्दिर में जाती, तो आपको सुनती व साथ साथ लिखती भी जाती।

*बांयें से दायें डॉ. जे.के महता अपनी पत्नी के साथ **श्रीमती पम्मी महता**, उनके पति एवं उनके बच्चे*

रात्रि हुई.. मुझ से कहा परम पूज्य माँ ने, 'मेरे साथ वाले बिस्तर पर सो जा.. खाली पड़ा है।' मैंने हाथ जोड़ कर क्षमा माँगते हुए कहा, 'शिष्य ऐसे कैसे कर सकता है.. मैं तो सीखने आई हूँ इस लिए आपके श्री चरणन् की तरफ ज़मीन पर ही सोऊँगी।' आप माँ ने अपने श्री चरणन् की तरफ मेरा बिस्तर लगवा दिया। धन्य धन्य हो गई मैं तो। 21 दिन कैसे बीत गये, पता ही नहीं चला। रात को मिलने गई तो मैंने माँ का धन्यवाद करते हुये यही कहा कि सुबह जा रही हूँ मैं.. आपको धन्यवाद व प्रणाम करने आई हूँ। माँ को मैंने यह भी कहा, माँ, जो आपके बारे में सुना व देखा.. आप बहुत भिन्न हैं। इस पर आपने कहा, 'पम्मी, कल मत जाओ.. जो पहले समझी थी और जो अब समझी हो वह लिख लो.. तुम्हारा 'कृतोस्मर' हो जायेगा।'

माँ का आदेश सिर आँखों पर! यह जान कर व मान कर मैंने सुबह 7 बजे से लिखना शुरु किया व शाम के मुझे 7 बज गये.. इस क़दर सब लिख कर माँ के कमरे में पहुँचवा दिया और अंतिम पंक्ति में यह लिखा-

सागर में जल बहुत है, गागर में ना समाये,
दिल में प्रेम बहुत है, पतिया लिखी न जाये।

यहीं से, यूँ ही आग़ाज़ हुआ था माँ से मिलने का सफर.. मगर हरि ओम् तत सत.. उन्हीं की करुण-कृपा, उस अनन्त ने कभी अंत होने ही नहीं दिया। माँ, आज मुझे आपके स्वतः स्फुरित प्रवाह से कुछ पंक्तियाँ स्मरण हो आईं.. जिन्हें पूज्य छोटे माँ ने लिखा.. ये अर्पणा के प्रार्थना शास्त्र # 2 में से ली गई हैं..

तुम प्रेरणा दो गर निज तन को, चल कर तव मन्दिर आ जाये।
तुम वक्ता बन के लब पे रहो, तो तेरी आरती गा जाये।।

मन तेरा पिया सब तुम ही तो हो, क्या कहूँ तुझे इस मन से कहो।
अंग अंग पिया सब तेरा है, जिस ढंग में चाहो तुम ही रहो।।

कौन शब्द अब कौन कहे, तुम ही तो सब कुछ कहते हो।
हर भाव प्रवाह में राम मेरे, तुम आप ही आकर रहते हो।।

यह 'मैं' तो कहीं भी बही नहीं, किसी रंग में भी पिया रही नहीं।
कर्मन् गति तव मन की, 'मैं' किसी ढंग में ढली नहीं।।..

कोटि कोटि धन्यवाद माँ!

कौन बुलाता है.. बार बार मधुबन में?

एक सत्संगी

कभी कभी अकेले में बैठकर यह विचार मन में उठने लगते हैं कि आखिर मैं साधना की किस श्रेणी में हूँ? मुझमें न ज्ञान है- न योग, न भक्ति, न निष्काम कर्म; पर फिर भी क्यों कोई शक्ति चुंबक की भाँति इस पत्थर दिल को, इस रेगिस्तान के समान शुष्क हृदय को अपनी ओर आकर्षित कर रही है?

सोच कर देखती हूँ तो ऐसा लगता है- यह केवल एक तरफ़ा आकर्षण है। खिचाव तो सारा उधर से ही है, मैं तो निष्प्राण सी जड़ यंत्र ही हूँ!

वह महान कृपा किसकी है, मैं समझ नहीं पाती, कुछ कुछ महसूस ज़रूर करती हूँ कि सारा प्रयत्न तो उधर से ही है। सत्संग में पूज्य 'छोटे माँ' इसमें उत्साह भर ही देते हैं।

मन को तो बार बार बहाने ढूँढने पड़ते हैं- कभी यह शरीर की कमज़ोरी की आड़ लेना चाहता है, कभी किसी कर्तव्य की, पर मधुबन का प्रेम हमें बरबस अपनी ओर खींच कर ले ही जाता है।

क्या यह मेरा इतना बड़ा सौभाग्य ही नहीं? यह तो वही पुण्यभूमि जहाँ भगवान कृष्ण सारथी बन कर आये थे। यहाँ की भूमि के कण-कण ने प्रभु के चरण स्पर्श किये थे। यहाँ का वायुमंडल उन्हीं के मुखारविन्द से निकले शब्दों से ओत-प्रोत है, पर हम जैसे प्राणी उन शब्दों को सुन ही नहीं पाते।

हमारे पास वह ग्रहण शक्ति ही नहीं जो उस वाणी को श्रवण राही हमारे हृदय तक पहुँचा सके। प्रभु की यही अपार कृपा है कि हम यहाँ की पवित्र भूमि के पवित्र कणों को श्रद्धापूर्वक अपने मस्तक पर लगा तो सकते हैं।

अपनी दयनीय अवस्था को देख कर हृदय पुकार उठता है- 'अब तो प्रभु इतनी सी दया करो.. मन में थोड़ी सी लग्न भर दो.. थोड़ा प्रेम प्रवाहित कर दो!'

पर ऐ मन! निराश न हो! हमारी असहाय दशा देख कर ही, दयालु भगवान ने हमें जगाने के लिये 'पूज्य माँ' को इस पुण्य भूमि पर फिर से भेजा है। यह उस प्रभु की ही कृपा है कि हम जैसे मंद बुद्धि- जिस भाषा में और जिस स्तर पर हैं.. उनका संदेश सुन सकें, समझ सकें और जीवन में उतार सकें, उसी के अनुसार प्रदान कर रहे हैं।

पूज्य माँ भगवान के उसी संदेश को हमें आज के संदर्भ में लागू करके बताते हैं कि उसको हम आज अपने जीवन में किस प्रकार उतार सकते हैं।

धन्य हैं वह लोग, जो दिन रात उनकी छत्रछाया में रहते हैं और नित्य इस अमृत का पान करते हैं। यह सुअवसर जो हमें भी बार बार मिल रहा है, यदि यह हमारे पूर्व कर्मों का फल है, तो कहीं ऐसा न हो कि यह सारा लेखा-जोखा इसी जन्म में ही समाप्त हो जाये!

हे माँ! अब तो कृपा करो कि इस शुष्क दिल में प्रेम व भक्ति के अंकुर फूट पड़ें और हम लता रूप में बढ़ते ही जायें। कृपा करो, कृपा करो, कृपा करो!

गुरु दर्शन

संकलन - विष्णु प्रिया महता
(पूर्व संकलन)

प्रश्न : कहते हैं कि गुरु दर्शन के बिना कुछ नहीं मिलता। गुरु दर्शन का वास्तविक अर्थ व महत्व जानना चाहते हैं।

पूज्य माँ : सबसे पहले तो यह समझना है कि गुरु कहते किसे हैं? गुरु तन नहीं हो सकता। सब ही तन पंच महाभूतों द्वारा रचित एक ही जैसे, माटी के पुतले हैं। इस दृष्टिकोण से कोई भी तन न्यून अथवा श्रेष्ठ नहीं। हम सब की रचना तो उस परात्पर ब्रह्म ने स्वयं करी है। सब ही तन रेखा द्वारा संचालित और नियन्त्रित हैं, फिर इसमें दूसरे पर गुण अथवा दोष का आरोपण कैसा? स्थूल में आप जिसे गुरु कहते हैं, वह तन गुरु नहीं हो सकता। जिस तन के राही उस पूर्ण ब्रह्म के गुण इस जग में प्रमाणित होते हैं, वह श्रेष्ठ तत्व ही गुरु है।

गुरु का दर्शन वास्तव में उस तन का नहीं बल्कि उस तन राही प्रवाहित उन गुणों का दर्शन है। उन गुणों को अपने जीवन में अंगीकार करना ही उस गुरु तत्व का अपने आंतर में आवाहन करना है। उन गुणों से प्रेम ही वास्तविक गुरु में श्रद्धा है। गुरु से प्रेम का अर्थ उस तत्व से, उन गुणों से प्रेम है जो उस के तन राही व्यक्त हो रहे हैं। यदि आपकी दृष्टि स्थूल तन में ही सीमित रह गई तो आप वास्तविक तत्व से वंचित रह जायेंगे।

गुरु का दर्शन पाकर यदि अपनी न्यूनता का आभास हुआ तो आप अपनी उस लघुता को त्याग कर, गुरु में प्रकट हुए श्रेष्ठ सूक्ष्म गुणों को अपने जीवन में साकार करेंगे। यही वास्तविक गुरु दर्शन है, जो आप को कल्याण की ओर ले जा सकता है। यह कहना और यह मानना कि आप गुरु जैसे नहीं

बन सकते, आप को गुरु तत्व से वंचित ही रखेगा। अपनी न्यूनता को देख कर उसके निवारण के लिए भी साधक गुरु से ही सहायता चाहता है। गुरु के सम्मुख वाद-विवाद अथवा तर्क-वितर्क का तो प्रश्न ही नहीं उठता। साधक तो अपने ही संशय और मनो विकारों के निवारण अर्थ गुरु के चरणों में बैठ कर परिप्रश्न करता है।

गुरु अपने जीवन राही शिष्यों को झुकाव का प्रमाण देते हैं। जब तक साधक स्वयं अपने जीवन में झुकेगा नहीं, वह गुरु को पहचान भी कैसे पायेगा? गुरु ने तो शिष्य के आंतर में निहित उस के श्रेष्ठ गुणों को प्रकट करना है। गुरु को पहचानने के लिये और गुरु तक पहुँचने के लिये साधक को गुरु से भी अधिक झुकना होगा और यही तो गुरु उस को सिखा भी रहे हैं। शिष्य की आंतरिक मल ने ही उस के आंतर में निहित गुरु तत्व और बाहर स्थित गुरु को आवृत कर रखा है। जब तक 'मैं' और 'मेरा' भाव की प्रधानता है, तब तक गुरु तत्व का दर्शन कैसे हो पायेगा?

अपने जीवन राही नित्य झुकाव का प्रमाण देने वाले गुरु आसन पर बैठकर अपने को श्रेष्ठ कैसे कह सकते हैं? उनका झुकाव देख कर अहंकार और भी उपद्रवी होता जाता है। जितना-जितना गुरु झुकते हैं उतना ही अहंकार और भी भड़कता है। अहंकार का यही स्वरूप है। यह भगवान के गुणों को कब पहचान सकता है?

इसका प्रमाण तो जीवन में बार-बार मिलता है। जब-जब भी भगवान जन्म लेकर इस धरती पर अवतरित होते हैं, हम जैसे लोग ही कभी उनको बनवास दे देते हैं, कभी गली-गली बदनाम कर देते हैं, कभी भरी सभा में शत्-शत् गाली देकर उनका अपमान करते हैं और कभी उनको सूली पर ही चढ़ा देते हैं। झुकाव स्वरूप भगवान जब अहंकार के सम्मुख आते हैं, उनकी टक्कर गुमान और अहंकार से होती है। अपने को धर्म का संरक्षक मानने वाले महाश्रेष्ठ और ज्ञानी जन ही उनको सहन नहीं कर सकते। वही लोग जो पूजा करके नित्य भगवान को बुलाते रहे , जीवन में भगवान के रूप को ठुकरा देते हैं।

भगवान ने जब जब जन्म लिया, उन्होंने तो केवल झुकाव का ही प्रमाण दिया है। वह तो सबके सेवक बन कर सबके काज ही संवारते रहते हैं, सबसे प्रेम ही करते हैं। साधारण जीव उनके निष्काम प्रेम को नहीं समझ पाते और अपने स्वार्थ की तुला में उनके प्रेम पर भी नित्य संशय करते रहते हैं। इस सब विपरीत व्यवहार के मिलने पर भी भगवान के गुणों में तनिक भी परिवर्तन नहीं आता। इन श्रेष्ठतम गुणों के कारण ही तो वह गुरु हैं।

झुकाव की प्रतिमा गुरु तो आसन पर बैठ कर अपने को श्रेष्ठ मान ही नहीं सकते। हम जैसों को भी क्षमा कर के अंगीकार कर लेना ही उन की विशाल हृदयता और उनकी महिमा है। ब्रह्म ने यज्ञ

रूप में सम्पूर्ण सृष्टि की रचना करी और हमें सब कुछ दिया, वह प्रतिरूप में हम से यह भी आकांक्षा नहीं रखते कि हम उनको याद भी करें। हम उन से ही सब कुछ प्राप्त करके जीवन में उन्हीं को विस्मृत कर देते हैं। इसी प्रकार गुरु का जीवन ब्रह्म के ही गुणों की महिमा है।

गुरु किसी एक गुण, स्वभाव अथवा रूप में सीमित नहीं हो सकते, उनका तो रूप ही तदरूपता है। जैसी भी स्थिति वाला, ज़रूरत वाला सामने आ गया, गुरु ने उसके ही स्तर पर आ जाना है। जो किसी एक मान्यता में बंधा है अथवा एक आसन पर बैठा है, वह दूसरे के स्तर पर क्योंकर जा पायेगा?

गुरु की कोई निश्चित मान्यता अथवा आचरण विधि नहीं हो सकती। उसके जीवन में तो वही गुण प्रकट होंगे जो सामने वाले व्यक्ति के हित में अनिवार्य हैं। जो साधक गुरु के इन गुणों का दर्शन करके इन गुणों से प्रेम करता है, वह तो अपने जीवन में उन गुणों से प्रेम करता है, वह तो अपने जीवन में उन गुणों को धारण करता जायेगा।

गुरु के दर्शन से सच्चा साधक कभी चैन नहीं पा सकता। गुरु तो उसके लिये एक तुला है और वह अपने को उस तुला पर अति न्यून पाता है। गुरु रूप दर्पण में अपना मुखड़ा देख कर साधक तड़प उठता है। यदि हृदय में यह तड़प नहीं उठी तो समझो अभी गुरु का दर्शन हुआ ही नहीं। यदि हृदय में गुरु के दर्शन पाकर उनके गुणों को अपने जीवन में साकार करने के लिए विह्वल हो उठे, तो जानो गुरु का दर्शन हुआ।

यही वह दर्शन है जो हमारे सम्पूर्ण पापों और दुष्कर्मों का नाश कर देता है। यह सत्य ही है कि ऐसे गुरु दर्शन के बिना कुछ मिल भी नहीं सकता। पूज्य माँ के ही शब्दों में..

गुरु की महिमा क्या कहूँ, गुरु स्थिति की बात नहीं।
गुरु स्थिति का शिष्य पे, हो सके कोई माप नहीं।।३२।।

गुरु वही तो तेरा है, सीस स्वतः जहाँ झुक जाये।
लाख चाहे उठ जाये, पर सीस नहीं फिर उठ पाये।।३५।।

गुरु गुण महिमा क्या गाऊँ, स्वरूप स्थित ही तो गुरु हो।
मन रहित अमन हैं वह, चाह रहित ही तो गुरु हो।।३६।।

अपना योजन कोई न हो, प्रयोजन भी कोई न हो।
आत्म रमणी नित्य तुष्ट, अन्य लग्न कोई न हो।।३७।।

❖ ❖ ❖

लक्ष्य सामने देख करी, इक चित उसमें ध्यान लगा..

गतांक से आगे..

धनुर्गृहीत्वौपनिषदं महास्त्रं शरं ह्युपासानिशितं संधयीत।
आयम्य तद् भावगतेन चेतसा लक्ष्यं तदेवाक्षरं सोम्य विद्धि।।

मुण्डकोपनिषद् - 2/2/3

शब्दार्थ:

उपनिषद् में वर्णित प्रणव रूप महान अस्त्र धनुष को लेकर उस पर निश्चय ही उपासना द्वारा तीक्ष्ण किया हुआ बाण चढ़ाये, फिर भावपूर्ण चित्त के द्वारा उस बाण को खींच कर; हे सौम्य, उस परम अक्षर पुरुषोत्तम को ही लक्ष्य मान कर बेधे।

तत्व विस्तार :

उपनिषदन् वर्णित सार तत्व, महा अस्त्र धनुष बना।
ओम नाम ही धनुष तेरा, नाम का है कमान बना।।1।।

प्रेम भक्ति उपासना का, तीक्ष्ण कर के बाण बना।
भावी चित्त सों खेंच करी, बाण को धनुष पर चढ़ा।।2।।

लक्ष्य सामने देख करी, इक चित्त उसमें ध्यान लगा।
एकाकार वृत्ति रूपी, बाण लक्ष्य पे देख चला।।3।।

परम सत्त्व अखण्ड रस, परम पुरुष है लक्ष्य मेरा।
नाम कमान रे मेरा है, राम ही है बस लक्ष्य मेरा।।4।।

राम कमान है नाम बाण, नाम गाये हर अंग मेरा।
राम राम कहते कहते, पहुँच ही जाये मन मेरा।।5।।

तम की यह पुकार नहीं, सत्त्व की यह पुकार है।
सत्त्व स्वरूप पर सत्, मन रे राम तुम्हार है।।6।।

जड़ पुकारे न आये, राम ही कर फिर थाम ले।
नित्य ही राम को ध्याये जो, राम ही कर फिर थाम ले।।7।।

पीकर प्याला नाम का, मदमस्त वह जिस पल हो जाये।
अन्य चाह वह क्या करे, अपनी सुध बुध खो जाये।।8।।

नाम की नैया नाम खेवैया, नाम के ही पतवार हैं।
हो न सके ओ साधक रे, राम नहीं तुहार हैं।।9।।

ओम् धनुष ही राह भये, साधक ही अब तीर भये।
उपासना में वह तेज है, प्रज्ञा तीक्ष्ण वह ही करे।।10।।

एकाग्र चिति वह हो जाये, बाण वह चल ही जाता है।
बिन जाये वह साहिल पे, साहिल सामने पाता है।।11।।

आत्म ही वा तीर भये, नाम रूप तन वह त्यज जाये।
भाव डोरी पे रे चढ़ी, तनो कमान वह त्यज जाये।।12।।

आत्म का फिर परम से, देख मिलन रे हो जाये।
अखण्ड रस में अखण्ड वह, एकरस ही हो जाये।।13।।

आत्म तीर को देख कहें, तीक्ष्ण करना ही होगा।
तप उपासना सिल पर से, उसे रगड़ना ही होगा।।14।।

संग मोह चाहना सों, प्रथम रे उठना ही होगा।
अन्य वृत्ति भावन की, मन को त्यजना ही होगा।।15।।

हर वृत्ति संकल्प विकल्प, एक रूप ही जब धरें।
नाम साबुन सों धोये, अन्य चाह मल दूर करे।।16।।

तीक्ष्ण तो रे तब ही हो, अरोपित मल जब धुल जाये।
परम चाह में फेन सम, अन्य चाहना घुल जाये॥17॥

मनो डोरी हो राम रंगी, आत्म तीर वह छोड़ दे।
आत्म परिशुद्ध रूप, परमात्म से मिल जाये॥18॥

शब्द भाव रे छोड़ के, निहित भाव तू जान ले।
इक दृष्टि इक चित्त रहे, सत्त्व सार तू जान ले॥19॥

मन ही बाण रे तेरा है, इसको चलना ही होगा।
साधना रूप उपासना से, तीक्ष्ण करना ही होगा॥20॥

भावना ही कमान रे है, राम डोरी से जो बंधा।
नाम की डोरी मन चढ़ी, लक्ष्य पे तू दे चला॥21॥

महा अस्त्र धनुष यह है, राम धनुष इसे कहते हैं।
देख सम्भल कर कर धरियो, नाम धनुष इसे कहते हैं॥22॥

निश्चित है गर बाण चले, लक्ष्य पे पहुँच ही जायेगा।
लक्ष्य जिस पल बेध ले, मन नहीं रह पायेगा॥23॥

परम पुरुष पुरुषोत्तम ही, एक लक्ष्य रे मेरा है।
मनो तीर किस विध रे चले, संशय ने रे घेरा है॥24॥

उपासना से वह राम कहें, संशय दूर रे हो जाये।
मनोलोक पे मल चढ़ी, पूर्ण दूर रे हो जाये॥25॥

अहम् संग मोह मल चढ़ी, कामना चाह ने घेरा है।
मनोबाण रे देख ले, तीक्ष्ण नहीं रे तेरा है॥26॥

संशय अभी रे उठते हैं, एकाकार वृत्ति नहीं हुई।
अनेक भाव ने घेरा है, एक चाह तेरी नहीं हुई॥27॥

हो एक चाह और एक लग्न, एक लक्ष्य ही रह जाये।
परम मिलन इक चाहना हो, प्रत्यक्ष लक्ष्य ही रह जाये॥28॥

बिन चले यह बाण चले, नाम की नैया पर बैठे।
भावना से पुकारे जो, राम खेवैया बन बैठे॥29॥

भावपूर्ण चित्त द्वारा, बाण डोरी पे जो धरे।
याद रहे ओ मन मेरे, तू नाम डोरी पे जो धरे।।30।।

राम ही दृष्टि वह देंगे, दिव्य दृष्टि जिसे वह कहें।
मनोमल जिस पल दूर होये, प्रज्ञा जागृत हो जाये।।31।।

यही साधिका कहते हैं, साधन पथ रे यह ही है।
लक्ष्य पे गर तूने जाना है, एक पथ रे यह ही है।।32।।

गर भक्ति की तेरी राहें हैं, परम दर्शन चाहें हैं।
चरण पे आँसू दे रे बहा, मल विसर्जन राहें हैं।।33।।

गर ध्यान लगा कर बैठा है, परम का ध्यान ही चाहिये।
मनोमल धुल ही जायेगी, लक्ष्य पे पहुँच ही जाइये।।34।।

गर ज्ञान की राही जाना है, तो ज्ञान जान ले यह ही है।
निरन्तर चित्त उसमें ही रहे, परम ज्ञान राह यह ही है।।35।।

हो एक चाह हो एक लग्न, बस रे अब तेरी होगी।
एकटक तू देखा करे, साधना सफ़ल रे तब होगी।।36।।

तूने परम को पाना है, परम तेरा ठिकाना है।
महामौन महा कारण ही, तेरा रे ठिकाना है।।37।।

तन तदरूपता छोड़ दे, अहम् मल अब न रहे।
बाह्य प्रज्ञता छोड़ के, आन्तर प्रज्ञ रे हो जाये।।38।।

कारण में फिर लय होये, समाधिस्थ तू हो जाये।
परम मौन के साधक रे, समीपस्थ तू हो पाये।।39।।

फिर वह वरें अरे जब चाहें, परम में मिला ही दें।
अज्ञान का घूँघट पूर्ण ही, निवृत्त वह करा ही दें।।40।।

त्रिगुण मायिक ही तो हैं, माया परे फिर हो जाये।
मनोमल बुद्धि मल फिर, निवृत्त रे पूर्ण हो जाये।।41।।

परम मिलन की राह यही, देख यहाँ पर कहते हैं।
लक्ष्य धरी मनो बाण चला, हो प्रत्यक्ष वह कहते हैं।।42।।

17-9-61

'माँ' - एक अनुपम उपहार

रेनु नागरथ

26 अगस्त को पूजनीय माँ का जन्म दिवस आ रहा है! सोचा, कौन सा उपहार दूँ इस दिव्यता को.. जो स्वयं ही हम सबके लिये अनमोल उपहार हैं! यही मन में आया कि क्यों न वह सब लिख दूँ.. जैसे-जैसे मैं इस दिव्यता के आग़ोश में आती चली गई!

मेरी छः साल की अबोध बुद्धि पर एक हादसा अपनी अमिट छाप छोड़ गया था! बिजली के करंट के कारण हमारी जन्म देने वाली माँ हम चार बहिनों भाइयों को रोता छोड़ कर मृत्यु को प्राप्त हो गई थी। उस समय घर में हम बच्चों के सिवा कोई नहीं था। मम्मी के शरीर में व चारों ओर पानी में करंट फैल गया था तब न जाने कहाँ से प्रेरणा पाकर मैंने घर का मेन स्विच बंद कर दिया, इससे हम सब भाई बहिनों की जान बच गई.. मुझे बाद में पता चला कि यदि उसे न बंद किया जाता तो हम में से कोई नहीं बच पाता।

तब से ही मन में यह 'खोज' शुरु हुई कि वह कौन सी शक्ति है जो हम भाई बहिनों को तो जीवन दान दे गई पर मम्मी को हमसे छीन कर ले गई? यही जानने के लिये मैं अनेकों मंदिरों, सत्संगों व जहाँ कहीं भी भगवान जी का नाम लिया जाता था.. जाती रही, साथ ही अपने तरीके से अपनी ज़िन्दगी जीती चली गई।

इसी तरह ज़िंदगी गुज़रती जा रही थी। जब मैं बड़ी हुई तो मुझे ऐसी माँ की ज़रूरत महसूस हुई जो मुझे सही रास्ता दिखाये, भटकने न दे व सही ढंग से ज़िंदगी को जीना सिखाये। इसी ज़रूरत को मन के लिये अनजाने में ही भगवान जी के आगे तड़प भरी प्रार्थना करती रही।

मैं तो प्रार्थना करके भूल गई थी.. पर भगवान जी को सच्चे मन से की गई पुकार कभी निरर्थक नहीं जाती, ऐसा मेरा अनुभव है। मुझे किसी सत्संगी से पता चला कि अर्पणा आश्रम मधुबन में बहुत अच्छा सत्संग होता है। मैं भी अपनी जिज्ञासा लिये वहाँ पहुँची। सौभाग्य से मुझे वहाँ जो सत्संग प्राप्त हुआ, वह उन अन्य सब सत्संगों से अलग था.. जिन पर मैं आज तक गई थी। यहाँ आने से पहले भगवान क्या हैं, भक्ति क्या है, पूजा करने का सही ढंग क्या है, यह सब बातें मेरे लिये अस्पष्ट थीं।

मेरी बुद्धि भगवान जी के गुण गाने और उनकी बातें सुनने तक ही सीमित थी। अर्पणा में आकर मुझे पता चला कि भगवान जी कहीं मंदिरों व सत्संगों में नहीं हैं, वह तो हमारे बहुत ही नज़दीक हैं.. हम सभी उस पूर्णता के ही अंश हैं। हम उनके जिन गुणों की महिमा गाते हैं, उनको अपने जीवन में सहज कर्मों द्वारा धारण करना ही उनकी सच्ची भक्ति है। उनके गुणों से प्रेरित और अपने भाव भरे कर्म ही हमें उनके चरणों में चढ़ाने हैं। यही पूजा का सही ढंग है। यह सब जानने के लिये शास्त्र पढ़ने हमारे लिये कितने आवश्यक हैं व शास्त्र की कथनी को हम जीवन में कैसे उतार सकते हैं, यह सब पूज्य माँ द्वारा जान पाई!

इसके साथ ही मुझे दर्शन हुए उस दिव्यता के.. जिसे मैंने पूज्य माँ के जीवन राही प्रवाहित होते देखा! मैं पहले ही दर्शन में इन से बहुत प्रभावित हुई! मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया भगवान जी के प्रति उनके निरन्तर गंगा की तरह बहते धारावत काव्य प्रवाह ने, जिस राही वह भगवान जी से बातें किया करते! उसी दिन से मैं 'माँ' के प्रति एक दिव्य आकर्षण महसूस कर रही हूँ!

सत्संग के बाद 'छोटे माँ' को मिलकर ऐसे लगा कि जैसे उनकी ममता पहले से ही मुझे अपने आग़ोश में लेने को तैयार है। सो पहली बार जो प्रसाद मैं अर्पणा से लेकर आई, वह था भगवान जी के प्रति प्रगाढ़ विश्वास का प्रसाद! मैंने जाना कि सच ही भगवान के घर में सब की सुनवाई है! मुझे भी मेरी मार्गदर्शक ऐसी माँ मिल गई जिनकी मुझको बहुत ज़रूरत थी!

सन 1981 में मैंने अर्पणा मन्दिर में आना शुरू किया था! सन 1982 में मेरी शादी हो गई। शादी से पहले जैसे भी पथप्रदर्शन की एक लड़की को ज़रूरत होती है, वैसा ही पथप्रदर्शन मेरा यहाँ से हुआ व शादी में भेंट रूप में अर्पणा द्वारा प्रकाशित सभी पुस्तकों का सैट प्राप्त हुआ! यह अमूल्य निधि मुझे एक ऐसे दहेज के रूप में प्राप्त हुई जो मुझे हर परिस्थिति में जीना सिखाती है!

तब से लेकर अब तक मैं जब भी वहाँ गई हूँ, मुझे हमेशा यही लगा जैसे जन्म जन्म की प्यासी मैं, ज्ञान के सागर में पहुँच गई! कबीर जी की वाणी तो पहले सुनी थी, 'ढाई अक्षर प्रेम के, पढ़े सो पंडित होए' परन्तु प्रेम के ढाई अक्षरों में कैसे सारी पंडिताई समाई है व इनमें कितनी ताकत है यही मैं पूज्य माँ को देख कर जान पाई हूँ! जब भी मैं अर्पणा में आती हूँ, हमेशा यही लगता है जैसे चारों तरफ से प्रेम ही प्रेम बरस रहा है!

एक खोज, जो बचपन से निरन्तर चली आ रही थी, उसकी भी संतुष्टि पा रही हूँ! बचपन में जो हादसा मुझपर अपनी अमिट छाप छोड़ चुका था, माँ के सम्पर्क में आने के बाद मुझे लगा, यदि वह न घटता तो भगवान के प्रति मेरी जिज्ञासा व सत्संग के प्रति मेरी रुचि ही न बनती।

ऐसा लगता है, जैसे माँ ने परिस्थिति को देखने का दृष्टिकोण ही बदल दिया है! यह नहीं कि माँ के सम्पर्क में आने के बाद मुझ पर मुसीबतों के पहाड़ नहीं टूटे, परन्तु सब होने पर भी कोई संबल बन कर मुझे थामे रहा। अक्तूबर 1990 में मुझे अत्यन्त दुःखप्रद परिस्थिति का सामना करना पड़ा!

मेरा बहुत ही प्यारा छोटा भाई कैंसर की चपेट में आकर, तीन साल तक उससे लड़ने के बाद हम सबको छोड़ कर चला गया! उसकी असमय मृत्यु को सहने की शक्ति मैंने पूज्य माँ, छोटे माँ व पापा जी से ही पाई। भगवान कैसे भक्त जनों के दुःखों को हरते हैं यह बात मुझे तभी समझ आई!

किन शब्दन् में गुण गाऊँ उस दिव्य माँ का.. जिनके सम्पर्क में आने के बाद बिन माँगे ही मुझे सब मिल गया। जब से मैंने पूज्य माँ द्वारा व्याख्या की गई, अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता-भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' को पढ़ा है, तब से मेरा सिर और भी श्रद्धा से उनके चरणों में झुक गया है! हरेक श्लोक को उन्होंने इतने विस्तार से समझाया है कि एक साधारण इनसान को भी गीता अच्छी तरह से समझ आ जाती है। गीता हमें जीवन में क्या आदेश देती है, उसका प्रमाण माँ अपने जीवन द्वारा हम सब को दे रहे हैं!

किन शब्दन् में गुण गाऊँ दिव्य माँ का.. जिनकी शरण में आने के बाद बिन माँगे ही मुझे वह सब मिल गया, जिसकी मुझे समय समय पर आवश्यकता होती है! शास्त्र क्या कहते हैं.. यह तो पूज्य माँ बताते हैं, और साथ ही दिनचर्या में उसे उतारने की विधि भी उनके जीवन राही देखी जा सकती है!

पूज्य माँ के जीवन से हम जैसे साधारण जीव भी उनके पदचिन्हों पर चलने की प्रेरणा पाते हैं! माँ तो ऐसे डॉक्टर है जो बिना ऑपरेशन किये ही आन्तर का सूक्ष्म से सूक्ष्म कचरा बाहर निकाल देते हैं!

क्या उपहार दूँ, एक दिव्य उपहार को.. जो आज भगवान ने मानवता को दिया है! कृतज्ञ हृदय से माँ की ही वाणी का आसरा लेकर इतना ही कह सकती हूँ :

'भव सागर में थी पड़ी हुई, तूने नैया मेरी थाम ली!
मैं तो नाम भी ले न सकी, तूने आकर मेरी नाम ली!
तोरी कृपा हुई है अपार, तेरा अन्त मैं जानूँ न!'

❖ ❖ ❖

माँ तो सब जानते हैं..

नीता टंडन

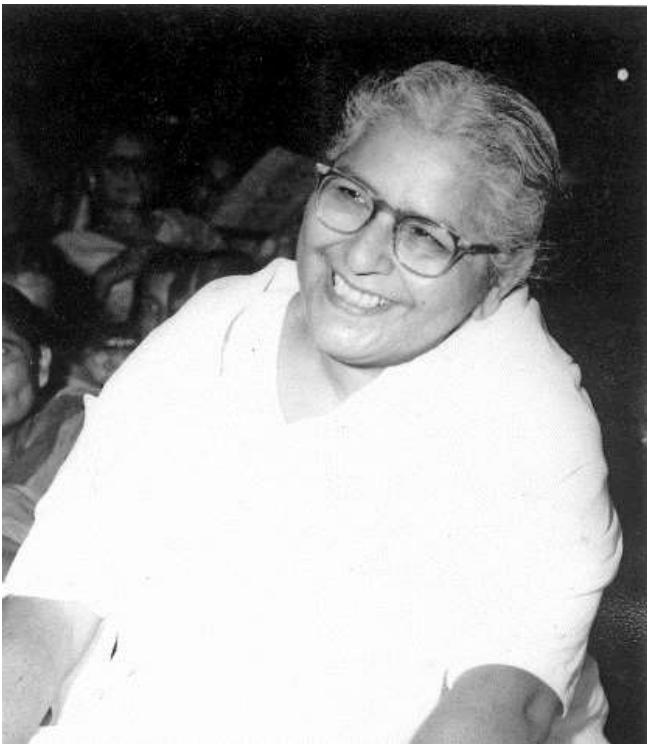

यह अटल सत्य है कि भगवान सब कुछ जानते हैं.. सदा हमें देखते हैं.. और हमारे हृदय की पुकार सुनते हैं। मैंने तो अपने जीवन में इसका अनुभव पाया है कि भगवान रूप पूज्य माँ सबके मन की बात जान लेते हैं। हम जो कुछ अपने मन में रख कर उनके सम्मुख जाते, वही बात सामने आ जाती.. हमारे बिना पूछे ही प्रश्नों का उत्तर मिल जाता! जिसकी जैसी ज़रूरत होती, वैसा ही वे रूप धर लेते। कोई ज्ञान की चाहना से आए तो ज्ञान का भण्डार खुल गया; कोई स्थूल समस्या लेकर आए तो उसे समस्या का समाधान मिल जाता। बच्चा सामने आए तो उसके स्तर पर जाकर वैसा ही व्यवहार.. बड़ा सामने आ जाए, तो उसके स्तर पर चले जाना.. ऐसे हैं हमारे भगवान रूप 'माँ'।

मैं परम पूज्य माँ से 40 वर्ष पूर्व मिली थी.. हमें जब भी मौका मिलता था मेरी बहिनें और मैं पूज्य माँ से मिलने चले जाते थे और काफ़ी समय उनके साथ व्यतीत करने के बाद सुश्री छोटे माँ से उनके अनुभव सुनते रहते थे। बहुत बार पूज्य माँ स्वयं कार चलाकर हमें घर तक छोड़ने आते, क्योंकि कहीं न कहीं यह चाह हमारी ही होती थी।

अर्पणा में होने वाली नृत्य नाटिकाओं में भी मैंने बहुत बार भाग लिया। जीवन की छोटी-छोटी समस्याएँ लेकर भी पूज्य माँ के सम्मुख पहुँच जाते और समाधान पाते। पूज्य माँ की इतनी सुन्दर मुस्कुराहट से बहुत बल मिलता! उनका कहा हुआ एक एक शब्द इतना महत्वपूर्ण है कि यदि उसे जीवन में प्रयोग किया जाए तो जीवन सुखमय हो जाए।

तत्पश्चात् मेरा व अश्विनी टंडन (मेरे पति) का विवाह मधुबन में ही पूज्य माँ के हाथों सम्पन्न हुआ। पूज्य माँ ने बहुत सुन्दरता से विवाह के सारे रीति रिवाज़ों को विधिवत समझाया और मैंने भी उनके द्वारा दी गई शिक्षा को जीवन में धारण करने की पूर्ण कोशिश की। पूज्य माँ की कृपा से ससुराल भी बहुत प्यार वाला मिला पर मुझे बहुत बार ऐसा महसूस होता था कि कहीं न कहीं मैं इतनी काबिल नहीं और मैं इस भाव में रहने लगी। पूज्य माँ ने जिस तरह से मुझे उस भाव से बाहर निकाला.. वह मैं जानती हूँ या माँ जानते हैं।

शादी के बाद एक वर्ष तक मुझे मधुबन में रहने का सौभाग्य भी मिला.. पूज्य माँ ने मुझे अपना खाना बनाने की ड्यूटी दे दी क्योंकि माँ के लिए कम तेल व कम नमक वाला खाना बनाना होता था.. खाना तो जैसा भी बनता होगा, पर पूज्य माँ से इतनी तारीफ मिलती कि पूछो मत! मैं तो जानती थी कि वह केवल मेरा हौंसला बढ़ा रहे थे..

पूज्य माँ ने प्यार से.. कभी कभी नाराज़गी जता कर.. बहुत सारी बातें समझाईं, जिसका मुझे जीवन में बहुत फ़ायदा हुआ व अब भी हो रहा है। मेरे बेटे, सनत ने वहीं अर्पणा अस्पताल में ही जन्म लिया। वह समय भी मुझे बहुत अच्छी तरह से याद है। उस समय मुझे बहुत तकलीफ थी.. पूज्य माँ अस्पताल आए और मेरे मुँह में एक छोटी सी इलायची दे दी, बस सारी तकलीफ़ गायब ! पूज्य माँ ने ही मेरे बेटे का नाम सनत कुमार रखा।

वहाँ से हम वापिस आ तो गये पर मन सदा वहीं पर रहा। जीवन में कई कठिनाइयाँ आईं, पर पूज्य माँ की कृपा से समय निकलता गया और मेरा तो पूर्ण विश्वास है कि पूज्य माँ के आशीर्वाद के कारण ही हम अच्छा जीवन जी पाए और ख़ुश रह पाए..

किस तरह से मन की बात सुनी जाती थी, यह बताने के लिए आपको एक घटना सुनाती हूँ.. जो मैं अपने जीवन में कभी नहीं भूल सकती। पूज्य माँ कभी किसी के घर नहीं जाया करते थे। 1992 में मेरी बेटी दिल्ली में पैदा हुई और मेरे पति अश्विनी जी को कुछ कारणवश दसवें दिन ही जापान जाना पड़ा। मेरे मन में एक ही बात थी कि बेटी का नाम पूज्य माँ से ही रखवाना है और सौभाग्यवश पूज्य माँ उन दिनों दिल्ली में ही थे। हमारे डैडी (ससुर जी) का स्वास्थ्य उन दिनों ठीक नहीं चल रहा था इसलिए मैं उन्हें भी नहीं कह सकती थी कि मुझे पूज्य माँ के पास ले चलें.. पर अंदर ही अंदर एक ही चाहना थी कि नाम पूज्य माँ से ही रखा जाये तो अच्छा होगा.. पर रास्ता समझ नहीं आ रहा था।

अचानक एक दिन पूज्य माँ ने फोन करवाया, 'नीता से कहो हम उसके घर आ रहे हैं। उसकी बेटी का नाम भी रखेंगे और उसके डैडी का हाल-चाल भी पूछना चाहेंगे।' बहुत कठिन है मेरे लिए उस पल का वर्णन करना.. इतनी ख़ुशी का पल था वह कि क्या बताऊँ! शायद वैसा पल जीवन में फिर कभी अनुभव नहीं किया। मैं अभी तक हैरान होती हूँ कि क्या मेरी पुकार में इतनी सच्चाई थी कि भगवान रूप माँ स्वयं मेरी चाहना पूरी करने हमारे घर तक आ गए।

पूज्य माँ ने मेरी बेटी का नाम करुणाजंलि रखा। मैं अपने बच्चों को भी बहुत ख़ुशकिस्मत समझती हूँ, जिन्हें पूज्य माँ ने नाम दिये। यही दुआ करती हूँ कि वे अपने नामों को सार्थक कर पायें।

मैं अब तक भी पूज्य माँ का कृपा प्रसाद पा रही हूँ। जितना कुछ पूज्य माँ से और अर्पणा से पाया है, उसका ऋण तो शायद कई जन्मों तक नहीं उतार पाऊँगी। बस एक ही चाहना है कि शेष सारा जीवन अर्पणा की कार्य प्रणाली में सहयोग देती रहूँ। इतना तो सामर्थ्य नहीं है कि अधिक कर पाऊँगी.. पर जितना हो पाएगा अवश्य करूँगी व करती रहूँगी।

नीता दिल्ली में 'डिवोशन' को सम्भाल रही है। वहीं की एक सेल पर..

धन्य हैं हम सब जिन्हें पूज्य माँ का इतना प्यार और दुलार मिला। ❖

अर्पणा से मेरा परिचय

श्रीमती शान्ता देवी
(पूर्व संकलन)

शुरु से ही मेरे मन में सत्संग सुनने की और उस से भी बढ़ कर एक शान्त व पवित्र वातावरण में वास करने की तीव्र इच्छा रहती थी। वर्ष बीतते चले गये। 32 वर्ष बाद सन 1979 में दिल्ली में मुझे पूज्य छोटे माँ का गीता प्रवचन सुनने व उनके दर्शन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

वहाँ पर जैसे ही मैंने गीता के एक श्लोक पर उनके द्वारा की गई व्याख्या सुनी, तो ऐसे लगा कि मेरे मन में उठने वाले हर प्रश्न का उत्तर वह बिना पूछे ही दे रहे हों। वास्तव में इससे पूर्व गीता का अर्थ मैं समझ नहीं पाती थी बेशक मैंने संस्कृत में विशारद की परीक्षा भी पास की हुई थी। छोटे माँ ने गीता की इतनी सरल व्याख्या कर उसे सरस बना दिया.. और मेरे मन में बार-बार गीता की व्याख्या सुनने की रुचि पैदा कर दी।

अपनी आन्तरिक क्षुधा पूर्ति के लिये मैंने छोटे माँ के प्रवचन सुनने के लिये उन दिनों नियमित रूप से दिल्ली आना शुरु कर दिया और मास में दो एक बार अवश्य ही उसका श्रवण करती।

छोटे माँ अपने प्रवचन में कई बार परम पूज्य माँ का नाम लेते थे। ''क्या कभी मैं भी वहाँ जा सकूँगी और पूज्य माँ के दर्शन कर पाऊँगी?'' मेरे आन्तर में ऐसे विचार उठने लगे।

भगवान की कृपा से एक दिन दिल्ली में ही अर्पणा द्वारा आयोजित सत्संग में मुझे पूज्य बड़े माँ के मुख से मधुर गायन के रूप में निसृत वाणी का स्वतः प्रवाह सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

मैं ख़ुशी से भर गई और आन्तर से यही आवाज़ उठी - ''जिस सच्चे गुरु की तलाश मैं बरसों से कर रही थी वह स्वयं तुम्हें प्रसाद दे रहे हैं।''

उन्हें देख मेरा सीस ऐसा झुका कि झुका ही रह गया और वहीं एक ओर खड़ी रह कर मैं उन्हें देखती रही व सोचने लगी, यह माँ कौन हैं? कोई विलक्षण दिव्यता भू पर अवतरित हुई है क्या, जो अपने स्वरों में प्रेम और करुणा की निरन्तर गंगा बहा रही हैं?

उन की आँखों में क्या जादू था? उन की सौम्यता, उनकी मधुर मुस्कान ने मुझे इतना आकर्षित किया कि मेरा मन वहाँ पहुँचने के लिये तड़प उठा। उस के लगभग दो साल बाद मुझे उनके पुनः दर्शन करने, प्रवचन सुनने व उनकी वाणी-प्रवाह का आनन्द प्राप्त करने का अवसर मधुबन आकर मिला।

वैसे तो मधुबन नाम ही मेरे लिये आकर्षक था लेकिन जब मैंने यहाँ पहुँच कर मधुबन में स्थित अर्पणा की "तपोभूमि" को देखा तो इस के बाह्य रूप को देख कर मेरा मन कह उठा कि हम स्वर्ग की कल्पना करते हैं, वह कहीं दूर नहीं, वह यहीं हैं, यहीं है, यहीं हैं।

दो तीन दिन मुझे यहाँ ठहरने का सौभाग्य मिला। यहाँ माँ की वाणी सुनने को मिलती थी लेकिन हृदय में एक ही पुकार थी कि हे भगवान! क्या मैं कभी इस पुण्य स्थली में आ कर बसूँगी? हरिद्वार ऋषिकेश के विभिन्न आश्रमों में मुझे कई बार जाने का मौका मिला था लेकिन यह आश्रम मुझे उन सब में से अद्वितीय लगा। यहाँ जीवन को जिस विधि से देखने की प्रेरणा मिलती है वैसी विधि न मैंने पहले कभी सुनी और न ही देखी थी।

प्रायः बड़ी बड़ी संस्थाओं के संचालकों की वेश-भूषा, भाव-व्यवहार में उन के उच्च आसन की याद बनी रहती और मैं कभी उन के निकट न पहुँच पाती। यहाँ पर मुझे "मैं" का मिटाव एवं दम्भ व अहंकार को परम चरण में समर्पित करने का जो भाव सुनने को मिला और जिस का दर्शन मैंने पूज्य

माँ के अपने जीवन में पाया, वैसा मैंने अन्यत्र कहीं नहीं देखा था। यहाँ भगवन के चरणों में धन-दौलत नहीं चढ़ाई जाती.. भगवान के गले को पुष्प मालाओं से नहीं सजाया जाता.. यहाँ तो अपनी "मैं" को, अपने अहं को तथा अपने दोषों को प्रभु चरणों में समर्पित करने की प्रेरणा मिलती है और राम तक पहुँचने के लिए राम के गुणों को अपने जीवन में उतारने पर बल दिया जाता है।

उन दिनों में सत्संग में गाये गये भजनों के शब्द मेरे कानों में गूँजते रहते थे-

"राग द्वेष मन से मिटे, पावन तुम्हारा नाम है।
चरण धूलि बन नित्य रहूँ, तोरे चरण मेरा धाम है।।

पल पल झुकती जाऊँ मैं, झुकाव तुम्हारा नाम है।
नाम की लाज निभाऊँ मैं, वही परम विश्राम है।।"

अपने मन में झुकाव व मिटाव लाने पर जिस तरह यहाँ सत्संग में व्याख्या होती है.. वैसी अन्यत्र मैंने कहीं नहीं सुनी थी। यहाँ तो हर परिस्थिति को भगवान की देन मान कर साधना पथ पर चलने की विधि बताई जाती है, इसलिए अपनी अनुकूल अथवा प्रतिकूल परिस्थिति में परिवर्तन लाने की किसी प्रार्थना का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

अर्पणा में ज्ञान-भक्ति व कर्म का समन्वय अनूठे ढंग से किया गया है। यहाँ पूज्य माँ स्वयं निष्काम कर्म की सजीव प्रतिमा हैं। अपने प्रति पूर्ण उदासीनता के दर्शन वह स्वयं ही हैं। तदरूपता की वह साक्षात् मूर्ति हैं। जीवन में दैवी गुणों को किस प्रकार धारण किया जाता है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण वह स्वयं ही हैं। अपने प्रति पूर्ण मौन व जग को ब्रह्म रूप मान कर उस की सेवा किस प्रकार की जाती है, ऐसा हम अर्पणा के पसार में ही देख पाते हैं।

अर्पणा की इस स्थली पर आकर व्यक्ति के जीवन में आशावान हो जाता है। जीवन में आयी हर परिस्थिति को अलग ही दृष्टिकोण से देखने लगता है। प्रभु के सच्चे स्वरूप को कर्मों राही पहचानने का प्रयास करता है और असत से निकल कर सत् पथ पर चलने की तैयारी करता है। ❖

परम पूज्य माँ

अर्पणा
समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
अगस्त 2023

आश्रम संस्मरण

अर्पणा दिवस 2023 - पूज्य माँ के शताब्दी वर्ष का शुभारम्भ!

26 अगस्त, 1924 को लाहौर में श्री सी.एल. आनंद (लॉ कॉलेज, लाहौर के प्रिंसिपल) के घर में एक छोटी बच्ची के जन्म के साथ एक ऐसे अविश्वसनीय जीवन की शुरुआत हुई, जो अपने सम्पर्क में आने वाले सभी के जीवन में सत्यता का प्रकाश, प्यार और ख़ुशियाँ लेकर आई।

26 अगस्त, 2023, से परम पूज्य माँ के शताब्दी वर्ष का शुभारम्भ हो रहा है.. यह समय, हम सभी के लिए जिन्हें पूज्य माँ से मार्गदर्शन मिला है, उनके जीवन और उनके द्वारा बताये गये दिव्य शाश्वत ज्ञान पर ध्यान केंद्रित करने का समय है।

पूज्य माँ की बाणी की दिव्यता से जिज्ञासुओं को भक्ति की ओर अग्रसर होने एवं उस परम पर ध्यान केंद्रित करने की प्रेरणा मिलती है।

माँ अक्सर कहा करते थे कि अर्पणा तो एक प्रयोग है.. ये देखने के लिए कि क्या अलग-अलग व्यक्तित्व, मान्यताओं और दृष्टिकोण वाले लोग शाँतिपूर्वक सद्भाव के साथ एक परिवार की तरह इकट्ठे रह सकते हैं और आध्यात्मिक जीवन की ओर प्रगति कर सकते हैं? अपने व्यक्तिगत अनुभव से हमने यह देखा है कि यह यात्रा कितनी आनंददायक, अक्सर चुनौतीपूर्ण.. लेकिन बहुत संतुष्टिदायक रही है.. और रहेगी!

परम पूज्य माँ द्वारा पौधा रोपण

निष्कामता - अर्पणा का आधार

परम पूज्य माँ द्वारा बताये गये आध्यात्मिक तत्व के आधार पर अर्पणा का बीजारोपण हुआ.. जो अब एक बहु शाखाओं वाले वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। इससे हमारे वंचित भाई बहिनों को आत्मसम्मान, शिक्षा, सर्वकल्याण एवं सशक्तिकरण जैसे फल प्राप्त हो रहे हैं। यह हम सभी के लिए पुनः अपने समर्पण को सुदृढ़ करने का समय है, जिससे हम पूज्य माँ द्वारा बताई गई निष्काम कर्म और सेवा की राह पर अपना चलना सुनिश्चित कर सकें।

ग्रामीण हरियाणा

परम पूज्य माँ के जन्मदिवस के समारोहों को अर्पणा की ग्रामीण टीम द्वारा विभिन्न गाँवों में आयोजित किया गया। यहाँ स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं का उत्साह देखते ही बनता था.. उन्हें गाते और नाचते देख कर हम सभी बहुत आनन्दित हुए। पूज्य माँ की दूरदर्शिता को वास्तविकता में लाने के लिए पिछले 25 वर्षों में उनके जीवन में क्या क्या परिवर्तन लाये गये हैं, उन्हें प्रदर्शित करने के लिए कई नाटकों का मंचन भी किया गया। आज ये महिलाएं स्वयं को सशक्त महसूस करती हैं!

बाढ़ग्रस्त गाँवों में फ्लू के खिलाफ जागरूकता अभियान

करनाल के आस-पास के 15 गाँवों में भीषण बाढ़ आ गई और 5 दिन तक ये गाँव अलग-थलग पड़ गए। फ्लू का प्रकोप व्यापक हो गया, जिससे विशेषकर बच्चे और बुज़ुर्ग प्रभावित हुए।

अर्पणा फेडरेशन ऑफ डिफरेंटली-एबल्ड के प्रधान, श्री नरेश (सरपंच) और 3 एसएचजी स्वयंसेवकों द्वारा जागरूकता अभियान चलाया गया, जिन्होंने गाँव के लोगों को फ्लू फैलने के बचाव के उपायों की जानकारी दी।

अर्पणा अस्पताल

अर्पणा अस्पताल द्वारा नेत्र शिविर

करनाल के इंद्री ब्लॉक के 15 गाँवों में भयंकर बाढ़ आई, जिसका प्रकोप 4 से 5 दिन तक छाया रहा। आई फ्लू की रोकथाम के लिए 28 जुलाई को अर्पणा अस्पताल द्वारा इन गाँवों में नेत्र शिविर का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 250 रोगियों की निःशुल्क जाँच की गई और दवायें दी गई।

रोगियों के लिए नई आशा

अर्पणा ने जरूरतमंद लोगों के लिए उचित दरों पर सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए एक नई एम्बुलेंस खरीदी है। मुख्यमंत्री के विवेकाधीन कोष से 5 लाख रुपये दिये गये, जिन्हें श्री हरविन्द्र कल्याण (घरौंडा से विधायक) द्वारा अर्पणा को भेंट किया गया। इस राशि का उपयोग एक 'जीवन रक्षक' एम्बूलेंस को खरीदने के लिये किया गया, जिसे स्थानीय लोगों की सेवा के लिये प्रयोग में लाया जाता है।

दिल्ली मोलरबंद के कार्यक्रम

कैरियर परामर्श

24 जुलाई को, मेजर जनरल संजीव चौधरी, जिन्हें भारतीय सेना में 37 से भी अधिक वर्षों का अनुभव प्राप्त है, ने कक्षा 9 से 12 तक की वरिष्ठ लड़कियों के साथ एक सत्र लिया जहाँ कैरियर योजना और भारतीय सेना में शामिल होने के विषय में बताया गया।

मेजर जनरल ने ‘अग्निवीर महिला भारतीय योजना’ एवं युवा भारतीय महिलाओं के व्यक्तित्व निर्माण पर चर्चा की और सफलता के लिए सामान्य युक्तियाँ भी बताईं।

व्यापक यौन सम्बन्धी शिक्षा

परिवार नियोजन संघ द्वारा कक्षा 5 से 11 तक की लड़कियों को आयु-विशेष जानकारी, मासिक-धर्म स्वच्छता और परिवार नियोजन के विषय में बताने के लिये एक सत्र का आयोजन किया गया।

वेक्टर जनित रोग

जुलाई में, एम.सी.डी के सहायक मलेरिया निरीक्षक, श्री कृष्ण गोपाल ने प्राइमरी और मिडिल स्कूल के छात्रों को वेक्टर-जनित रोगों - जैसे डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया आदि की रोकथाम की जागरूकता के विषय में बताया। उन्होंने उन्हें घरों के आसपास पानी एकत्रित होने पर उत्पन्न परजीवियों आदि से मुक्त रखने के सरल तरीकों की जानकारी दी।

मोदीकेयर फाउंडेशन द्वारा जीवन कौशल सत्र आयोजित किया गया

जून में बड़ी कक्षाओं के लड़कों और लड़कियों के लिये अलग-अलग एक 3 दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। आयु विशिष्ट जीवन के कौशल के विषय में बताया गया जैसे ज़िम्मेदार व्यवहार, साथियों के दबाव में आकर मादक द्रव्यों का सेवन एवं बाल यौन शोषण (POCSO एक्ट की जानकारी भी दी गई)। सभी को प्रमाण पत्र दिये गये।

हिमाचल प्रदेश कार्यक्रम

सिंचाई प्रणाली से किसानों की आय बढ़ी

अर्पणा की सहायता से 9 गाँवों के निवासियों द्वारा सिंचाई टैंक बनाए गए, जहाँ उन्हें सब्जियाँ उगाने में सक्षम बनाया गया। पहले लोग केवल मक्का ही उगाते थे जिसे सिंचाई की आवश्यकता नहीं थी, लेकिन उन्हें प्रति वर्ष लगभग 2,000 रुपये ही मिलते थे।

अब 8 गाँवों के किसानों ने सब्ज़ियाँ उगाई हैं, जो बेचने के लिये इस वर्ष के अंत तक तैयार हो जायेंगी।

मई में लहसुन तैयार हो गया था। किसानों ने 1,276 किलोग्राम लहसुन बेचा, जिसकी कीमत रु. 85,245 थी। केवल लहसुन से किसानों ने औसतन10,000 रुपये से अधिक कमाये।

अर्पणा के कार्यक्रमों में उदारता से समर्थन देने के लिए हम बैजनाथ भंडारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट, श्री रविंदर बहल और श्रीमती सुषमा अग्रवाल (नई दिल्ली) के साथ-साथ अवीवा लाइफ इंश्योरेंस, इंडिया डवेल्पमेंट रिलीफ़ फंड (यूएसए), के बहुत आभारी हैं!

We urgently need your assistance to continue these programs
in Haryana, Himachal Pradesh, and New Delhi
Contact Persons: Mr. Harishwar Dayal, Executive Director, Mobile: 91-9818600644
Mrs. Aruna Dayal, Director Development, Mobile : 91-9991687310
Donation to Arpana provide_50% tax relief under section 80G of the Income Tax act 1961
Send Donations to: Arpana Information & Resources, Madhuban, Karnal, Haryana 132037
Emails: arct@arpana.org and at@arpana.org, Websites: www.arpana.org and www.arpanaservices.org
Instagram@arpanaorg, You Tube:Arpana Charities, Facebook Arpana Charities&Arpana Trust

Please send donations to: Arpana (Information & Resources Office),
Madhuban, Karnal, 132037